district of Andhra Pradesh, there was a leakage of about 19,000 litres of Kerosene. The leakage has occurred from a storage tanker of HPCL. The whole of kerosene, worth Rs. 2 crores, has flown into a local stream, which not only polluted the water but also caused a lot of commotion in that area.

Through you, Sir, I request the Government of India to probe into the matter, at the earliest, and take necessary action in this regard.

THE BUDGET (RAILWAS), 2004-2005

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SANTOSH BAGRODIA): Now, the Minister of Railways will reply to the debate on Railways.

श्री एस.एस. अहलुवालिया(झारखंड)ः उपसभाध्यक्ष महोदय...

श्री विजय जे.दर्डा (महाराष्ट्र)ः उपसभाध्यक्ष जी...

उपसभाध्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया)ः एक मिनट, पहले रेलवे मंत्री जी को बोलने दीजिए । वे बहुत देर तक बोलेंगे, आप का नंबर आ जाएगा ।...(**व्यवधान**)...आप बैठ जाइए । रेलवे मंत्री जी को बोलने तो दीजिए...(**व्यवधान**)...उनके बोलने के पहले ही आप खड़े हो गए है ।...(**व्यवधान**)...आप का नंबर आ जाएगा. आप बैठिए न ।

श्री एस.एस. अहलुवालिया: उपसभाध्यक्ष महोदय, हमने एक नोटिस दिया हैं कि जब तक केन्द्रीय मंत्रिमंडल में जितने....(**व्यवधान**)...के Charges लगे हुए मंत्री drop नहीं होते, जब तक इन पर कार्यवाही नहीं होती ...(**व्यवधान**)...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SANTOSH BAGRODIA): I can't allow all this. *(Interruptions)* I can't allow all this. The Railway Minister will reply.

(तत्पश्चात् कुछ माननीय सदस्य सदन से उठकर चले गए)

प्रो.राम देव भंडारी(बिहार)ः श्री मुरली मनोहर जोशी, श्री लाल कृष्ण आडवाणी-सभी टेंटेड मिनिस्टर आप के यहां थे...(**व्यवधान**)...ये लोग लालू जी का भाषण सुनने लायक नहीं है...(**व्यवधान**)...जाओ, आप लोग लालू जी का भाषण सुनने लायक नहीं हैं ।....(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (**श्री संतोष बागड़ोदिया**): रेलवे मंत्री जी आप बोलिए ।

रेल मंत्री (**श्री लालू प्रसाद**): महोदय,....(**व्यवधान**)....क्या यील्ड करना है ।

श्री विजय जे. दर्डा: सर, मै एक मिनट बोलना चाहता हूं ।

श्री लालू प्रसाद: ठीक है, बोलिए ।

उपसभाध्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया): क्या आप यील्ड कर रहे है।

श्री लालू प्रसाद: जी, इन्हें बोलने दीजिए।

श्री विजय जे.दर्डा : धन्यवाद, उपसभाध्यक्ष महोदय। सदन में रेल बजट सदा पेश होता रहा है, लेकिन यह पहला अवसर है जब किसी रेल मंत्री ने कुल्हड़ वाले आम आदमी का रेल बजट पेश कर इस सरकार की नीति को स्पष्ट किया है। इसमें न रेल कियारा बढ़ा है, न माल भाडा बढ़ा है, फिर भी तेज रफ्तार वाला प्रगतिशील बजट आपने दिया है। इसके लिए मैं हमारी नेता श्रीमती सोनिया गांधी जी को और प्रधान मंत्री डा.मनमोहन सिंह जी को बधाई देता हूं, जिन्होंने ऐसे रेल मंत्री को चुना कि उन्होंने कुली तक का भी ध्यान रखा है। इसलिए यह बजट कुल्हड़ से लेकर कुली तक का बजट है। लालू जी के इस रेल बजट के कारण तमाम सांसदों की अपेक्षा बढ़ी है कि अब उनके क्षेत्र की रेल का विकास अवश्य होगा। इसी के साथ मेरी भी सोई हुई उम्मीद जाग उठी है कि मेरे क्षेत्र महाराष्ट्र में बसे यवतमाल को भी अब ब्रॉडगेज के दायरे में लाया जाएगा। महोदय, आजादी के बाद से यह मांग बार बार उठती रही हैं कि विदर्भ के पिछड़े आदिवासी इलाके में विकास के लिए बड़ी लाइन की सुविधा मिले, लेकिन हमेशा अपने समय के रेल मंत्री ने रेल बजट में हमें निराशा ही दी है। अग्रेंजों के जमाने में गांधी बाबा के वर्धा से गुरू गोबिंद सिंह जी के नांदेड़ तक यवतमाल पुसद के रास्ते रेल लाइन की योजना बनी थी, भू-संपादन भी किया गया था, रेल लाइन भी डाली गई थी, किन्तु दूसरे महायुद्व के कारण वह काम पूरा नहीं हो सका था। अगर यह 230 किलोमीटर की लंबी लाइन लालू जी मंजूर कर देते हैं तो वहां विकास के द्वार खुले जाएंगे, उद्योगों को गति मिलेगी, वहां के आदिवासी लैंडलेस लेबर वाले इलाके की प्रगति होगी और वहां की गरीब जनता आपको, लालू जी, बहुत बहुत धन्यवाद देगी। मुझे पूरा विश्वास है कि लालू जी हमें निराश नहीं करेगे। दूसरा, नामपुर से आदीलाबाद मालगाड़ी जाती है, वहां सारी सुविधाएं उपलब्ध है, इस मार्ग पर यात्रियों के लिए अगर आप यात्री गाड़ी शुरू कर देंगे तो नागपुर से आदीलाबाद होते हुए गुरू गोबिंद सिंह जी के नांदेड़ तक इस सुविधा का लाभ आम आदमी भी उठा पाएगा।

महोदय, लालू जी के प्रति इस देश के आम आदमी में ही नहीं बल्कि अन्य देशों के लोगों में भी एक जिज्ञासा है इनका आकर्षण सात समुंदर पार भी पहुचं चुका है। मुझे यह जानकारी देते हुए खुशी हो रही है कि सऊदी दूतावासों ने लालू जी के बारे में जानकारी हासिल करना शुरू कर दिया है और इनकी सबसे अधिक मांग सऊदी अरब, अलजीरिया और लीबिया से आई है।...(**व्यवधान**)..पाकिस्तान वाले तो इन्हें देखकर के बड़े खुश हो जाते है। इतना ही नहीं, अमरीका के हार्वर्ड विश्वविद्यालय के समाजशास्त्री भी लालू जी को शिक्षा के विषय के रूप में अध्ययन करना चाहते हैं कि उनके व्यक्तित्व में ऐसा क्या है कि वे लोगों के बीच इतने लोकप्रिय है। अभी हाल ही में जानकारी प्राप्त हुई है, लालू जी शायद आपको भी जानकारी नहीं होगी, कि"टाइम्स" मैगजीन की एक टीम आपके व्यक्तित्व का अध्ययन करने के लिए छपरा पहुंची है। यह हमारे देश के लिए

गौरव की बात है कि"टाइम्स" जैसी मैगजीन की नजर भी आप पर पहुंची है। अब जो व्यक्ति इतना लोकप्रिय होता है तो लोगों की भी उससे उतनी ही अपेक्षाएं बढ़ जाती है। ऐसे में अगर हम सब लोगों की उम्मीद जागी है तो उस पर शक की कोई बात नहीं हैं। मैं लालू जी से विनती करूंगा कि जिन मांगों का मैंने जिक्र किया है उनका वे अवश्य ध्यान रखेंगे और उन पर विचार करेंगे। धन्यवाद।

SHRI V. NARAYANASAMY (TAMIL NADU): Sir, I rise to support the railway Budget presented by the Railway Minister. Sir, the Railway Minister's Budget has been widely welcomed by the people of this country whether they are from the poorer sections of the society or whether they are from the upper classes. The people have appreciated the Budget presented by the Railway Minister because he has taken care of all the sections of the society while presenting the Railway Budget. While the Railway Minister is giving importace to bigger States, he should also take care of the smaller States. Therefore, Sir, I have written to the Railway Minister and I am grateful to him for giving a broad gauge line between Pondjcherry and Villipuram, a 40 km route. I welcome it. Now,.Sir, three proposals we have given. On electrification, our State Government has agreed to give 50 per cent from the State exchequer. Therefore, firstly, I want the hon. Railway Minister to start electrification. Secondly, Sir, the train which has been running between Chennai and Pondicherry is a trunk route. There is one train running in the morning and one train running in the evening. We want it to be made a three-trip train: morning, afternoon and evening. The third thing is, a survey should be done between Pondicherry and Tindivanam which is the constituency of the Hon. State Minister and it may cover up to Tripathi. Therefore, I want the three proposals to be accepted by the hon. Railway Minister.

श्री लालू प्रसाद: उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं उन माननीय सदस्यों के प्रति आभार प्रकट करता हूं, जिन्होंने बहस में भाग लिया और बहुमूल्य सुझाव दिए। हमको सबसे पहले अचरज और हैरत इस बात के लिए है कि जिस दिन मैं रेल बजट पेश कर रहा था, एन.डी.ए. के लोग, खास कर के हमारे भा.ज.पा. के साथी, पता नहीं उनके अंदर कौन सी कमजोरी है कि जब मैं खड़ा होता हूं तो वे अपनी पीठ दिखाते है, आंख से आखं नहीं मिलाते है, कहीं न कहीं लुक-छिपकर हमारी बातों को सुनते रहते है और सैंट्रल हॉल में या कहीं भी छिप-छिपकर बात करते रहते हैं। हमारे हिन्दू धर्म में बहू और भैंसुर का एक अलग ही रस्म है। जब छोटे भाई की बीवी आती है घर में, तो वह बड़े भाई को देखकर मुंह छिपाकर अलग हो जाती है। महोदय, इनके प्रति हमको तरस है और दुनिया भर में, यह जग-जाहिर है कि एन.डी.ए. और खास करके भा.ज.पा. के लोगों के कृत्यों को दुनिया ने आंख फाड़-फाड़ कर

देखा। भा.ज.पा. संगठन के अध्यक्ष को नोट गिनते हुए देखा। रक्षा मंत्री के घर में पता नहीं वह देवी कौन है, और कौन है,वहां भी रक्षा मंत्री के घर में देश की सरहदों पर लड़ने वाले हमारे देश के बहादुर सैनिकों के साज-सामान में क्या हुआ, तहलका डाट काम में दुनिया ने देखा, लालू ने तो कान से सुना। जिसने ताज महल को देखा, वह बेहतर वर्णन करेगा, जिसने कान से सुना, जरूर गलती करेगा। महोदय, असल में ये लोग डिप्रेशन में है और बहुतो का तो दिमाग डि-रेल कर गया है। इनकी पार्टी के एक सर्वोच्च नेता राजस्थान में बोले कि जैसे राजस्थान की असैम्बली में आप लोगों ने सरकार बदल दी, ऐसे ही दिल्ली में भी बदल दो। इन्होंने कोलकाता में बयान दे दिया कि छपरा में बैलट पेपर फाड़ दिए गए, जब कि वहां मशीन से मतदान हुआ था। मैं ज्यादा इसलिए नहीं कहना चाहता हूं क्योंकि इस देश में सत्ता में भूखे लोग,राम और रहीम के बंदों के बीच में नफरत फैलाकर,गुजरात में घृणित दंगा कराकर, राम की कृपा से राम का नाम लेकर आए थे लेकिन हिंदुस्तान की जनता को मैं सेल्यूट करता हूं, देश की माइनॉरिटी को मैं सैल्यूट करता हूं कि उन्होंने इनको पावर से बेदखल किया और इस देश में एक महान महिला को, सोनिया जी को, जिनको ये विदेशी-विदेशी कहते रहते हैं, उनको इस देश की इंसाफी जनता ने जिताया। यह गजब का इंसाफी देश है हमारा।यह एक बार जिसको चाहता है, उसे आससमान में चढ़ा देता है, फिर कान पकड़कर उसे नीचे उतार देता है। यह हमारा इतना महान देश है, ऐसा बगीचा पूरी दुनिया में कहीं नहीं मिलेगा। अलग बोली, अलग भाषा, अलग भेष, यह हमारा भारत देश।

महोदय, सोनिया गांधी जी को ये लोग विदेशी बोलते थे, चूंकि अब मैं मंत्री बन गया हूं, इसलिए थोड़ा कंट्रोल करना पड़ता है। इन लोगों ने सोचा भी नहीं होगा कि सोनिया गांधी जी इतनी उंचाइयों को छुएंगी। लालू यादव जब बोलता था, तो ये बोलते थे कि लालू पागल हो गया है, क्या बोलता है लालू यादव ? आपको मालूम होना चाहिए कि हम किस कुल-खानदान से आते हैं। हम लोग मथुरा, कृष्ण भगवान की नगरी से आते है और वहां से हम लोग जहां-जहां माइग्रेट करके पूरे देश में फैले हुए है। संसार में ऐसा उदाहरण शायद ही कोई होगा कि राष्ट्रपति भवन पहुंचकर सोनिया गांधी जी ने इतना त्याग किया। जिनके जूते-चप्पल लोग दिन भर साफ करते रहते हैं, एम.एल.ए. और एम.पी. बनने के लिए, सोनिया गांधी जी ने जो उदाहरण पेश किया है हिंदुस्तान की राजनीति में, क्या इनके पास कोई नेता है, ऐसा कोई इंसान इनके सामने है ? इसलिए मैंने कहा कि एन.डी.ए. के लोगों, भाजपा के लोगों, तुम जब आओ तो सोनिया जी को प्रणाम करो और जब जाओ, जब भी सोनिया जी को प्रणाम करो। अगर सामने लज्जा आती है, तो मन ही मन गुनगुनाते रहो, कोई जरूरी नहीं है कि मुंह से बोलते रहो। अलग मंत्र भी पढ़ सकते हैं। इनको तकलीफ है इस बात की। ये लोग यहां आते नहीं, आइए-जाइए नहीं, मैं क्या उसका कोई नोटिस लेता हूं ?

महोदय, हमारा देश महान देश हैं। कॉमन मिनिमम प्रोग्राम हमने बनाया है। विगत दिनों में जो रेलवे को नैग्लेक्ट किया गया है, जो रेलों की बदहाली हुई है, रेलों में आग लगाकर हमारे

भाई –बंधुओं को जलाया गया है, 24 आदमी घायल हुए है, आगे मैं आपको बताऊंगा कि मैं क्या करने जा रहा हूं।

महोदय, भारतीय रेल दुनिया के तीसरे स्थान पर है। हमारी सरकार ने माननीय सोनिया जी के मार्गदर्शन में और माननीय मनमोहन सिंह जी के नेतृत्व में यह संकल्प किया है कि वह रेलवे को अच्छे स्थान पर पहुचाएगी। करोड़ों लोगों की आस्था, विश्वास और सुरक्षा हमसे जुड़ी हुई हैं। विगत दिनों में रेलों की जो हालत हुई है, जिस तरह से नैग्लेक्ट किया गया है, वह देखने लायक है। महोदय, 6 साल तक ये लोग दे दे राम, दिला दे राम, खाने वाला दाता राम-दिन भर इसी काम में लगे रहे। जो कोर सैक्टर है रेलवे का, उस पर इन्होंने ध्यान नहीं दिया। यह एक अनोखी कहानी है। इसलिए मिनिमम कॉमन प्रोग्राम में हम सभी लोग शामिल हुए। ये जो हमारे साथी हैं। प्रि-पोल एलायेंस के, उनके अलावा लैफ्ट वगैरह के लोग शामिल हुए। मैं जानता हूं कि ये क्या प्रचार करते रहते हैं। हमने स्वीकार किया है कि रेल की सुरक्षा, मॉडर्नाइजेशन,और सफाई और दुनिया में तीसरे नम्बर पर रहने वाली भारतीय रेल को दुनियां के अव्वल दर्जे पर, एक नम्बर पर लाने के लिए हमारी सरकार का संकल्प है। इससे हम पीछे हटने वाले नहीं हैं। ये बोलते रहते है, कोई रास्ता नहीं, कोई उपाय नहीं। महोदय, एक दर्पण जो हमने देश की जनता के सामने, देश की खिदमत में रखा है, यह एक ऐसा दर्पण है कि हिन्दुस्तान के चाहे जिस धर्म में विश्वास करने वाले लोग हों- हिंदु हो, मुस्लिम हों, सिख हों या इसाई हों, किसी पंथ को मानने वाले लोग हों इन सभी का हमने इस रेल बजट में ख्याल किया है। हमारे दक्षिण में भाई बहन-बिलो पावर्टी लाईन वाले लोग, हम एम.पी. है, एम.एल.ए. हैं मंत्री हैं, बड़े लोग है ,जो बड़े लोग है हवाई जहाज से जाते हैं धार्मिक स्थालों या अंतिम जगह पर नमन करने व माथा टेकने, एतिहासिक जगहों पर जाते हैं, देश के पर्यटन स्थलों को देखने जाते है, बिहार के गया में दक्षिण के हमारे भाई विष्णु पद मंदिर में पितृ पक्ष में अवसर पर जाते है। बिहार देवताआं की नगरी भी है। यह हमारे धार्मिक ग्रंथ और पुराण में साफ-साफ लिखा हुआ है कि हमारे पुरखे वहां विष्णु पद मंदिर के पास पीपल के पेड़ पर इंतजार करते रहते हैं कि मेरा कोई बेटा या नाती हमको पिंड देने या जल देने आ रहा है या नहीं। महोदय, जो इस देश में गरीब लोग है, विलेज में रहने वाले लोग हैं जिनकी जेब में पैसा ही हैं उनके लिए हमारी सरकार ने व्यवस्था की कि"विलेज ऑन व्हील्ज" भारत दर्शन करो और चारों तरफ सब्सीडाइज्ड रेट से लेकर करोड़ों लोगों को काम देने का हमारा वायदा हैं, वायदा ही नहीं हमने लागू किया है। जो गांव में रहने वाले लोग है, जब से यह प्लास्टिक युग आया और थर्मोकॉल आया जिसको भाजपा लाया तब से हमारे गावं के कारखाने बंद होग गए। चूकर बनना बंद हो गया। चाक चलाने वालों बर्तन बनाना सीखो, कुम्हार जाति के करोड़ों लोग इस देश में हैं, सारे देश में फैले हुए है। जब हम पैदा हुए तब हमारी मां इस्तेमाल करती थी कुम्हार भाईयों के द्वारा बनाई हुई, गढ़ी हुई मिट्टी का कढ़ाई। उन दिनों मिट्टी की हांडी में भात बनता था महोदय। ढक्कन भी मिट्टी का, कुल्हड़ भी मिट्टी का तथा इनका

ब्याह में, शादी में सभी जगह प्रयोग होता था। लेकिन जब से हमने प्लास्टिक युग में प्रवेश किया है तब से हमारे गावं के कारखाने बंद हो गए। चलिए, निकलिए, बहस करिए, लालू को दागी बोलो। चलो निकलो, गांव में चलो भाजपा के लोगों, क्या हालत है देश की। महोदय, एक आशा की किरण फैली है, लोगों को विश्वास हुआ है तथा इससे चारों तरफ चाक चलना शुरू हो गया , कुल्हड़ बनने शुरू हो गए। कुल्लड़ मे शुद्व तरीके से पीओ जबकि गिलास साफ नहीं धुलता है। इनके मुंह में, उनके मुंह में, किसके मुंह में कौन बीमारी, क्या इंफेक्शन हो जाता है। इससे सारा ड्रेनेज भी बंद हो गया , यह गलता भी नहीं है और जिससे पोल्यूशन भी फैलता है। इसलिए चूकर से लेकर कपड़े तक जो हम कंज्यूम करते है, बापू ने कहा था,"Khadi is the uniform of freedom struggle" खादी वर्दी है भारतीय स्वतंत्रता के इतिहार की। लेकिन हमारी खादी बंद हो गई थी। तो कहां से काम दीजिएगा। हमारी करोड़ों मां और बहनों, चरखा चलाना सीखो, चरखा जो बंद था। जो इस देश का बुनकर है, रेलवे रोजगार का अवसन भी सृजन करता है।

रेलवे रोजगार का अवसर सृजन करता है इसलिए हमने खादी को लागू किया है, उसके बारे में केवल भाषण ही नहीं दिया है। खादी बनाने वाले इस देश के बुनकर लोग है, माइनारिटी के लोग है, जो मारे-मारे फिरते है, जिनके तांत बंद हो गए है, उनको हमारी सरकार ने चालू करवाया है।

बेरोजगार युवा और युवती, इस देश का यूथ, युवा और युवती पढ़ लिखकर इंटरव्यु देने जाना चाहता है, सरकारी दफ्तरों में इंटरव्यु देने के लिए जाना चाहता है, उनके लिए हमने रेलवे में आना-जाना फ्री कर दिया है। हम केवल आह्लवान करते हैं कि युवक और युवतियों आगे आओ, संघर्ष करो, धरना पर बैठो। युवकों को बर्बाद करने का काम भाजपा, आरएसएस ने किया है। उनको लाठी थमाकर के, उनको अलग पढ़ाई इत्यादि। महोदय, इसलिए हमारी सरकार ने फैसला लिया है कि देश के युवक और चुवतियां, वे चाहे जितनी भी संख्या में हों, जो इंटरव्यु का लेटर दिखायेंगा, नंबर दिखायेगा, वह जहां जाना चाहता है, उसे जाने-आने की सुविधा दी जायेगी। रेल टैक्स लगाने, खून चूसने का ही साधन नहीं है, यह अपने देश के युवा-युवती का वेनफेयर करने का काम भी करता है। जिनके माता-पिता की जेब में पैसा नहीं है, जो युवा-युवतियों पैसे की कमी के कारण इंटरव्यु देने नहीं जा पाते है,घर में रह जाते हैं, उनका हमने ध्यान रखा है। जो शैड्यूल्ड कास्ट, शैड्यूल्ड ट्राइब है, ओबीसी है, जो गरीब आदमी है, उनका बैकलॉग है, महोदय, सोशल जस्टिस हमारा कमिटमेंट है, इसलिए हमने कहा है कि इनकी भर्ती की जाएगी, बैकलॉग को क्लेयर किया जाएगा।

जो विकलांग लोग है, हीमोफीमिया रोग से ग्रसित है, असाध्य रोग से ग्रसित है, उनके साथ ट्रीटमेट कराने के लिए जाने वाले व्यक्ति को टिकट में रिययात दी जाएगी। देश के महान सैनिकों के सम्मान में, उनकी विधवाओं को रेलवे में हमने छूट दी है, हमने उनको इजाजत दी है जिससे कि हमारे सैनिकों में एक अच्छा मैसेज जाए। जब कारगिल युद्व हो रहा था, कुछ लोग कहीं थे, हाउस

में बात उठ रही थी, मैं उसके बारे में बोलना नहीं चाहता हूं, देश के सैनिक लड़ रहे थे, मैं बिहार सरकार को धन्यवाद देना चाहता हूं, क्योंकि बिहार सरकार ने देश के सैनिकों को एनकरेज करने के लिए सबसे पहले ऐलान किया, हमारी सरकार ने ऐलान किया, ऐ बहादुरों, पीछे नहीं देखना,घर को नहीं देखना, हम देखने के लिए तैयार है शहादत दोगे दस लाख रूपया देंगे, विडो होने पर उसको नौकरी देंगे, सम्मान के साथ हम जहां पर दफन करना है, तो दफन करेंगे, जलाना है, तो जलाएंगे। आपको गोल्ड मैडल देंगे। इससे देश के सैनिकों में आशा की किरण फैली। बहादुरी के साथ उन्होंने शत्रु का मुकाबला किया। जिनकी लापरवाही से कारगिल में शत्रु घुसा था , उस समय ये लोग सोये थे, अब जगे हुये है, अब पावर में नहीं है तो जगे हुये है, भागते हैं, पीठ दिखाकर भागते हैं। हिम्मत होती तो सीना दिखाते। कितना दम हैं तेरे में, देख लिया और देखेंगे। यह सरकारी भाषा , मैं नहीं बोलता हूं।

महोदय, हमारी प्रतिबद्वता है, इसलिए हम देश के सैनिकों के सम्मान में, विडो के सम्मान में, जो हमारी बहनें हैं, उनकी तरफ ध्यान दे रहे हैं। व्हीलर बुक स्टाल है, जिनकी मोनोपाली चारों तरफ है, साउथ में दूसरे का मोनोपाली, इसलिए 25 प्रतिशत युवक और युवतियों के लिए इसमें रिजर्वेशन करने को हमने कहा है। इसमें जो वेस्टेड इंटरेस्ट हैं, इसको हमने तोड़ने का काम किया है।चार दिन पहले इसी सदन में रेल में घटित हुई गतिविधियों के बारे में, अपराध में बारे में प्रश्न किसी कांग्रेस के माननीय सदस्य ने किया था, उसकी हमने समीक्षा की हैं।

हमने समीक्षा की। हमने पाया कि ज्यादा से ज्यादा अपराध जो हुए है, जो मर्डर हुए हैं, जो खून हुए है, वे किस राज्य में ज्यादा हुए है, और यह मैं नहीं कहता हूं, वह कमोबेश महाराष्ट्र में सबसे ज्यादा, उत्तर प्रेदश में दूसरे नम्बर पर और फिर बिहार में तीसरे नम्बर पर हुए हैं अदर पिठि आफेन्सेस अन्डर द लॉ। उसमें भी हमने देखा कि चलती ट्रेन में मर्डर कम और रेलवे के परिसर में ज्यादा मर्डर हुए है। मैं जानता हूं, मैंने इसको पता किया है कि डिसीज़ कहां है, कीटाणु कहां हैं।जितने भी क्राइम है, अपराध है, मर्डर है, खून-खराबे हैं-एके-47 चमकते थे, ज्यादा से ज्यादा अपराधी इनके दलों में हैं। सारा हिसाब-किताब हैं। नैतिकता की बात करते हैं ? ईमानदारी की बात करते हैं ? सारे जग में जाहिर है। फूफी अच्छी होती तो फूफा दूसरी शादी करते क्या ? यही हालत इनकी है। हमने इस बीमारी को पकड़ा है और हमने कहा है कि इसकी जड़ में स्क्रैप है। ठीका-पट्टा, बंदूक गिरा देता है, नहीं गिरने देंगे, हमारा रेल का अफसर डर जाता हैं। बोलते हैं कि बेटे को किडनैप कर लेंगे। इसलिए महोदय, बड़ा ठोक-ठका कर हमने यह फैसला लिया है कि देश भर का जो माफिया होगा या रेलकर्मी होगा या जो वैगन में साझादार होगा, लालू यादव देश भर के बदमाशों से लड़ने के लिए तैयार है। हम इस देश को बेहतर बनाना चाहते हैं। इसलिए हमने कहा कि स्क्रैप नहीं बिकेगा, बंद करो। लोहे से लोहा बनाना सीखों। लोहा हमारा महंगा बिक रहा है और हम गजड़ा के भाव में अपने स्क्रैप को लुटा दें ? पेपर वाले बोलते थे, कुछ लोग बोलते थे कि पैसा कहां से

लाओगे ? हमने प्रधानमंत्री जी से बात की है, फाइनेंस मिनिस्टर साहब से बात की है, अपने खर्चो को कम करके हमने बचत भी की है, हमारे पास पैसा हैं। हमने पता किया कि पूरे ट्रक रोड से कैसे जा रहे हैं ? हैवी-हैवी मशीनरी ट्रकसे लेकर जा रहे हैं। सारे रोड्स बर्बाद हो रहे हैं, पोल्यूशन हो रहा है। हम इसकी तह में गए तो पाया कि इस देश के जो ट्रेडर्स हैं, व्यापारी है, वे रेल को ज्यादा सुरक्षित समझते हैं। ज्यादा समझते हैं कि हमें रेक मिल जाए, आज अप्लाई करें और कल हमें मिल जाए लेकिन कहीं न कहीं न कोई मिली भगत है, कोई कारण हैं। हमने पूछा कि ऐसा क्यों हो रहा हैं तो मालूम पड़ा कि रेक का जो ऑर्डर दिया, डिब्बे का जो ऑर्डर दिया, प्राइवेट को दिया, सरकारी उपक्रम को दिया। बोलते है , लोहा महंगा हो गया है। हमें साठ सत्तर हजार ब्हील चाहिए, हमें चक्का चाहिए, लाखों चक्का चाहिए। हम चक्का नहीं बना पा रहे हैं। देश के जितने कल-कारखाने हैं, उन्होंने मारकर रख दिये। सबको बैठा दिया। इस सरकार ने, एनडीए की सरकार ने और अब व्हील कहां से मंगा रहे हैं? विदेश से व्हील आ रहा है। क्या हम इतने एडवांस हो गये हैं, हम इतने धनी हो गए है कि हमारे देश के जो कारखाने हैं, हमारे देश के जो मकैनिक है, हमारा जो हुनर है, वह खत्म कर दें ? महोदय, यह देश अमेरिका, सिंगापुर नहीं हो सकता है। मैन-पॉवर हमारी समस्या है। एक सौ पांच करोड़ हमारी आबादी हो गयी है। इसको कहां आप खपाएंगे, कहां काम देंगे, क्या करेंगे ? देश का पैसा बाहर जाएगा। आखिर उसमें घपला होगा। हम जमालपुर गए। जमालपुर के कारखाने को बिहार में लालू ने नहीं बनाया था, हमारे पुरखों ने बनाया था।

जमाल साहब के नाम पर वह कारखाना हैं जिसमें इतना बड़ा इनफ्रास्ट्रक्चर है चारों तरफ। देश भर के जितने भी इंजीनियर रिटायर हो चुके है , सबका लर्निंग सेंटर जमालपुर केन्द्र था, आप उसे युनिवर्सिटी ही समझिए। देश के रेलवे के सारे कल-कारखानों का ग्रैंड फादर है वह जमालपुर का कारखाना। जब हम वहां गए तो हमने एक क्रेन को देखा। पहले हम लोग गांव से कोलकाता जाते थे। तो हावड़ा का पुल देखकर दंग हो जाते थे। बाइस्कोप में देखते थे-"मकई का भुट्टा देखो, ये हावड़ा का पुल है देखो।" उसके डिज़ाइन को देखकर हम लोग हैरत में पड़ जाते थे। इस बार जब मैं रातोंरात जमालपुर गया तो देखा कि जमापुर के हमारे कर्मचारियों ने, मैकेनिकों ने एक क्रेन बनाई है-140 टन की क्रेन-जो जर्मनी बनाता है-हमारा जमालपुर भी बनाता है। हमने वहां के कर्मचारियों को सैल्यूट किया कि शाबाश जवानों।

बहुत बातें हैं, मैं यहां नहीं बोलूंगा क्योंकि झंझट बढ़ जाएगा,बहुत आदमी फंस जाएंगे। इसलिए हमने कहा कि रिवाइवल करो। हमारे देश के लड़के-लड़कियां कहां जाएंगे ? उनके हुनर को समाप्त करोगें ? इसलिए हम रिवाइव करेंगे, चारों तरफ रिवाइव करेंगे। डिब्बे के लिए कोई लोहा नहीं देता हैं ?

महोदय, ई-प्रोक्योरमेंट के ज़रिए माल की डिमांड आई कि इतने पाट्र्स भेजो, कोई लिखापढ़ी नहीं, पता नहीं कितना सैंक्शन करेगा ? दिया या नहीं दिया? इधर सप्लाई, उधर डिमांड,

बात खत्म हो गई । इसलिए इस सिस्टम को हमने बदला है । हमने ई-प्राक्योरमेंट दिया है टेंडर का, ठेके का , हिसाब –किताब का कि कहीं से बैठे हुए तुम अपना टेंडर डालों और जो हरकत करेगा, उसके लिए लालू यादव खड़ा है । इसीलिए आर.पी.एफ. से लेकर सारी तरफ, कौन-कौन कहां काम में लगा है-असली काम तो कोई और करता है, आपकी चीनी अगर रेल में जा रही और रास्ते में किसी ने बोरा साफ कर दिया, किशमिश जा रही है तो बोरा खाली कर दिया, गरम मसाला जा रहा है तो वह भी चला गया, खाली बोरा प्लेटफॉर्म पर और फिर रेलवे पर लाद दिया । सब इंद्रजाल का खेल है-यह सर्कस हम नहीं चलने देंगे । ये जो सर्कस चलाते थे, इस सर्कस के बाघ हम है, हम ठीक कर देंगे । कहां टिकने वाले हैं ये लोग ? इन लोगों के जैसा डरपोक कोई हिदुस्तान में है क्या ? दुनिया में हैं ? ये खाली फूंक भरते हैं, डर जाओगे तो गायब हो जाएंगे । कहां गए तोगड़िया, कुछ पता है ? कहां गए गिरिराज किशोर है, कहीं पता? एक बार चुनाव में कहीं देखा था-त्रिशूल बांट रहे थे । अरे, देश के लोहे की जो लूट हो रही थी, उसको रूकवाते अपनी सरकार से । ये त्रिशूल बांट रहे थे, तो ऐसे लोगों को मैं अच्छी तरह से जानता हूं ।

महोदय, आपको मालूम है हमने लाठी उठाई तो क्या किसी को मारने के लिए उठाई थी ? गांधी बाबा की लाठी-हमने अपनी जनता को बोला कि लाठी उठाओं रे, लाठी । सोसायटी में सांप-छछुंदर बहुत हो गए है, समाज को बचाना है । हमारी पवित्र कुरान है । महोदय, शायद आपको भी मालूम नहीं होगा, हम लोग कहां पढ़ते हैं ? हमारे मुस्लिम भाइयों को मालूम है, पवित्र कुरान में मूसा साहब की लाठी का वर्णन हैं कि लाठी में कौन सी ताकत हैं, पूछ लीजिए उनसे । हमने लाठी उठाई तो बोले-लालू यादव लाठी उठा रहा है । इसलिए महोदय, इनको मैं जानता हूं । मैं इनकी कोई परवाह नहीं करता, परवाह करनी भी नहीं चाहिए । ये सब अभी क्या प्रचार करते हैं कि ज्यादा दिन तक सरकार नहीं रहेंगी । आप तक खबर नहीं गई होगी । अपने लोगों को बांधे रखने के लिए ये लोग क्या प्रचार कर रहे हैं कि ज्यादा दिन तक सरकार नहीं रहेगी, फिर वाजपेयी जी आ रहे हैं । अब कोई चासं हैं । अब कोई चांस हैं ? हमारे यहां एक कहावत है-"फिर मुरली"

यदि एक बार हांडी चढ़ गई, हांडी फूट गई तो अब कहां चढ़ने वाली है । इसलिए ये अपना सर्कस ठीक करने के लिए बोलते हैं कि ठहरो-ठहरो, हम लोग आ रहे हैं । बोलते है कि ये लोग भागेंगे ।...(व्यवधान)...हां-हां बोलते हैं । कोई बोलता है कि कोई अपनी दुकान मुम्बई में जाने के लिए , टनाटन वाला ...नाम नहीं लेंगे । यह सब हिसाब किताब हो गया हैं । व्यापारी लोगों की तो समझ में नहीं आएगा । अपना काम भी लो, लेकिन देश के व्यापारी भाइयों को और सभी लोगों को मैं बताना चाहता हूं कि वे आने वाले नहीं है, कम से कम लालू पर विश्वास करो । यह सरकार पांच साल चलेगी और फिर पाचं साल आगे भी हमारी सरकार चलेगी । अरे, इसका क्या जवाब है ? सोनिया गांधी ने कहा कि मैं प्रधानमंत्री नहीं बनूंगी । पद मिलते हुए भी सोनिया गांधी ने यह कह दिया । उनका बड़ा त्याग है ।हम खुद नाराज हो गए थे और हमने उनको लिखकर भी दिया था ।

इसका आपके पास क्या जवाब है ? यदि है, तो बताओं । वाजपेयी जी ने इनको तो वर्चुअली किनारे कर दिया हैं । यह मैं पक्की बात बताता हूं । जो आने वाले हैं और छिपकली की तरह लुब-लुब कर रहे हैं, उनका कोई चासं नहीं है । वे क्या-क्या प्रचार करते है, हम सब जानते हैं । हम को बोलते है कि लालू नोटंकिया है, लालू जोकर है । जो इस देश का अभिजात्य वर्ग है वह यह सब प्रचार करता है । यहां दिल्ली में एक सौ हाई-फाई क्लब है और अलग-अलग मेम्बर्स है । ये सब उनको सर्टिफिकेट देते रहे है । ये तरह-तरह के चक्रव्यूह रचते रहते हैं । हम को इन पर विश्वास ही नहीं हैं । हम दिल्ली में 1977 से लौटे हैं । नए एमपी लोगों, आप दिल्ली को समझना क्योंकि दिल्ली में संसार भर के विद्वान लोग रहते है । नहीं तो लंगड़ी बिलाई घर में ही शिकार हो जाएगी । महोदय, मैं माननीय सदस्यों की भूरी-भूरी प्रशंसा करता हूं और खासकर के लेफ्ट के लोगों की । जो कुली है, साईकिल स्टेंड पर काम करते हैं, साहिब लोगों की मिट्टी ढोते हैं, उनकों कोई कहीं देखने वाला नहीं है उनको देखने के लिए हमारी सरकार है । हमने यह कहा है कि जो हमारे कुली हैं, ये हमारी लाल सेना हैं । इनको इन्होंने मारकर रखा है । हमने कहा कि इनका जो टेंशन है कि कुली कही हैं और उसकी पत्नी कहीं है तो इसलिए हमने कुली भाइयों को भी टिकट दी, वहीं पर हमने उनकी पत्नी को भी फ्री टिकट दिया कि कुली भाई के पास रहना । बहुत सी जगह रेल के किनारे बहुत लोगों ने मंदिर बनवा दिए हैं । हमने अचानक निरीक्षण किया तो पाया चलती ट्रेन में कोई भी चलती ट्रेन में शौच कर सकता है तो समूचे जगह छीटें डाल देता है । पेशाब का अलग से छींटे आते हैं । यदि कोई ट्रेन जंक्शन में लगी हो तो शौचालय रंग-बिरंगा होगा । जहां पर हम अपने बाल-बच्चों के साथ रेल पकड़ने के लिए खड़े रहते हैं, वहां पर पाखाना गिरता है । इसलिए थैंक्स टू द रेलवे आफिशियल्स । हम भी ऐसा ही सिस्टम बना रहे हैं जैसे जब हम जहाज में जाते हैं तो वहां पर पेशाब और पाखाना करते समय नीचे नहीं गिरता है वैसे ही हम यहां भी ऐसा ही इंतजाम कर रहे हैं । जहां भी आप पाखाना करें, चाहे उठते हुए करें या बैठकर करें या कहीं पर कोई छींटे नहीं गिरेंगे । बाद में इसको आदर के साथ वहां से निकाला जाएगा और आदर के साथ उसको कहीं पर भस्म किया जाएगा ताकि हमारा शहर-साफ रहे । ये बोलते है कि दागी हैं, देखिए, हम इनका पाखाना साफ कर रहे हैं । ये पेशाब कर रहे हैं हमारी देह पर । ये बीजेपी के लोग नहीं कर रहे हैं ? रेल मंत्री हमीं तो हैं ।

हमारा ही नाश्ता भी कर रहे हैं । हमारी रेल में हमने पता किया है कि बहुत से ऐसे लोग है, जिनकी रोज बुकिंग रहती है । टिकट अनुमान दी है, लेकिन लेकर पंद्रह-पंद्रह आदमी जा रहे हैं । हम उन्हें पकड़ लेंगे । वे हमारे आफीसर से कहते हैं कि कैटरिंग वाले को मारेंगे । चप्पल मारेंगे ? हम उन्हें ठण्डा कर देंगे । जो खान-पान है, जो पौष्टिक आहार है, उसमें चाहे कोई भी आदमी हो, यह नहीं चलने दिया जाएगा । जो लोग फ्रूटी पीते है, वे फ्रूटी मत पीजिएगा । कोको कोला, फैण्टा, पेस्टीसाइट्स को लेकर हाउस में कितनी मारा-मारी हुई थी । वे ब्वाइलर है,ब्वाइलर । जितनी तेज रेल चलती है, उतनी ही तेजी से यह भी गर्म होता है । आइस में डाल रहे हैं फेण्टा, इसमें डाल

रहे हैं कोला। आपके टिकट का पैसा हम लेते है । खाने का पैसा टिकट में लेते हैं । जिसने अच्छी दही नहीं खाई है, उसे शुद्वता क्या मालूम । लोग सप्रेटा की दही खा रहे हैं । सप्रेटा दूध नहीं होता । दूधिया उसे फाड़कर छत पर सुखाता है । कौवे वगैरह जो करते है, वह उसी को पीसकर, घोलकर दूध बनाता है । अभी भी हम पाचं क्विंटल दूध बेचते हैं । तीन सौ गाय है ।हम गावं में आए थे तो मुकुन भाई बोला कि गणेश जी भूखे हैं , जाकर दूध दे आओ । हम दूध देते थे, गाय थी । एक किलो दूध गणेश जी लेते थे । मैं सच बोल रहा हूं, कोई बनाई हुई बात नहीं बोल रहा हूं । हम लोग कौन है, कहां से आए हैं ? महोदय, जब हम दूध देने जाते थे तो हमने देखा कि भाई का साहब है, इससे प्योर दूध इन्हें देना चाहिए । उसके बच्चे का पेट खराब हो गया । असली दूध तो कभी पिया ही नहीं था । उनकी पत्नी सुंखवा कर एकदम बिगड़ गई, गाली दी कि बच्चे का पेट खराब हो गया है । तब हमने कहा कि नहीं देगे । वे बोले कि भाई डांटना । भाई ने कहा कि हमने डांट दिया हैं । दूसरे दिन जब दूध लेकर गए , भाई नटवर सिंह जी, माननीय मंत्री जी, जब गणेश सिंह जी के यहां दूध लेकर गए थे तो हमारे भाई ने समझाया कि अब प्योर मत दो, तो हमने पांच डिब्बे पानी मिला दिया । वह दूध हमने जाकर पहुंचा दिया । उनके बच्चे का पेट ठीक हो गया, बोले कि हां, यह ठीक है, तुम्हारा यह दूध ठीक हैं ...(**व्यवधान**)...महोदय, इस संदर्भ में मेरा"हम" से तात्पर्य है कि हमारे दूध बेचने वाले कुछ भाई लोग आपको तो जो खाते हैं, वह ही नहीं पता तो हम क्या करें । आपको पोइजन खिलाएं ? इसलिए रेलवे के खान-पान में मट्ठा, दही, लस्सी, जितने हमारे डेयरी कोपरेटिव्ज है, सभी राज्यों को डेयरीज से-यहां यह गलतफहमी हो रही हैं कि बिहार से हो रहा है, लोग ऐसे बोलते हैं, परंतु मैं कहना चाहता हूं कि जितने भी कोपरेटिव्ज है, सुधा, कोरियान, अमूल जहां कभी भी हैं, सभी जगह परएक चलेगा, स्टेशन पर रहेगा, एक ब्वॉयलर ठण्डा रहेगा ताकि आदमी सोचता जाए और अखबार पढ़ता जाए । दही, लस्सी पीकर अच्छे विचार सोचता जाए । महोदय, आप बताइए क्या ऑज ज्यादातर लोग यह काम करते हैं ? ज्यादातर लोग अब गाय-भैंसे का काम छोड़ रहे हैं । अब दूसरी जाति के लोगों ने यह सब अपना लिया है । नहीं अपनाएंगे तो भूखे मरेंगे, तब हम क्या करेंगे ? हम लोगों की जो फाउण्डेशन है, वह दूध-दही बेचकर, खाकर ही हम लोग यहां है ।बिका तो बिका नहीं तो पाव भर घोलकर पी लिया पहलवान हो गए । यादव से लोग डरते हैं कि कुछ मत बोलो, नहीं तो मारा-मारी करेगा । इसलिए खान और पान में, बेहतर खाना, यह केटरिंग हैं कि अगर आप स्टेशनों पर जाइएगा तो देखिएगा कि लोग पर्यटनों पर लगाए हुए बैठे हैं । यह किसने किया है ? खान-पान का ये ही लोग फैसला करते हैं । एक ही तरह के आदमी सबद केटरिंग में है । हम नहीं खाते हैं ।रेल स्पेशल में हम लोग बैठेहै, मंत्री लोगों के लिए रेल है, राष्ट्रपति जी के लिए भी रेल है । हम गए तो हमने पूछा कि क्या खाना पका रहे हो ? मसाला कहा का है ? बोले एम.डी.एच. मसाला है ।

हमने कहा कि यह एम.डी.एच मसाला गर्म है या ठण्डा पता लगता है स्वाद में ? इसलिए हम ने कहा, "सिल लोढ़ा रखना सीखो, धनिया, गुलमरी, जीरा ताजा पीसना सीखो ।"क्या मसाला

खिला रहे हैं ? लोगों का स्वाद खत्म हो रहा है यह एम.डी.एच.मसाला टी.वी.पर, मीडिया पर बड़ी आवाज खींच रहा है। इस के लिए हमारे गांव की बेटियों, महिलाओं का जो आप ने ग्रुप बनवाया है, उन महिलाओं से काम करवाएंगे। आज आप देखिए बाजार में जो अचार बेचते हैं, यह कोई आचार है ? पता नहीं अचार है या जहर है ? तो गावं की महिलाओं का जो समूह है, जो देशभर का समूह है, उनसे काम करवाएंगे। सुनो बहन लोग, उस समूह का बना बढ़िया अचार हम प्रमोट करेंगे ताकि गावं में रहने वाली महिलाओं को काम मिले। हमारी दादी मां मिट्टी की घेली में आप का अचार बनाकर रखती थी और हम खाना छोड़कर वही खाते रहते थे। अब एम.डी.एच. मसाला, कोका कोला, फेंटा, फ्रूटी आ गया हैं। फ्रूटी की खोलिए ओर गिलास में रखिए, देखिए पिल्लू हैं। महोदय, हिंदुस्तान में एक ही पानी है और आज वह भी पॉल्युटेड हो गया है। वह गंगा का पानी जिसे हम बंद कर के रखते थे, पिल्लू नहीं होते थे। यह फ्रूटी है, फंगस है फंगस। इसलिए मैं ऐसी चीजों की इजाजत नहीं दूंगा जोकि हमारी रेल में सारी चीजों को खराब करता है, लोगों के स्वास्थ्य को बर्बाद करता है । इसलिए आगे हम यह कहने जा रहे हैं।

महोदय, देश में लोग चर्चा करते थे कि लालू भाड़ा बढ़ा देगा। क्यों बढ़ा देगा? चाहे गरीब हो या अमीर हो या मिडिल क्लास पैसेजंर हो , वह भारत का नागरिक है। भाड़ा बढ़ाने से क्या आता है। हम को रेलवे का मॉडर्नाइजेशन, सेफ्टी, 3 लाइन, 4 लाइन, 5 लाइन, लाइफ लाइन-ये करना पड़ेगा। माल ढुलाई एक तरफ है और पैसेंजर एक तरफ हैं।

महोदय, हमने आते के साथ ही सभी माननीय संसद सदस्यों को चिट्टी लिखी थी , whether they are from the upper House or the lower House. आपका स्टेट का प्रोजेक्ट है, आप को हम सुझाव दीजिए, मार्गदर्शन कीजिए, हुक्म कीजिए कि हम आप के राज्य में कौन-कौन सी चीजों को लें। लेकिन महोदय, जैसा कि मैंने कहा विगत दिनों में रेलवे को **neglect** किया गया है। रेलवे, जो एक कोर सेक्टर होना चाहिए, जो उस पर **thrust** होना चाहिए था, उस पर ध्यान नहीं दिया गया। इसलिए हमारा **thrust area** जम्मू है। महोदय, हमारी सरकार का गठन हुए और हमें मंत्री बने हुए डेढ़ महीना हुआ है, हम ने इस काम को आगे बढ़ाकर जो बुनियाद डाली है, उस में **remote areas** में भी हम हिंदुस्तान की जनता को सुविधा देना चाहते हैं। महोदय, बस्तर के इलाके में आज तक रेल नहीं गयी है, तो हामरा ट्राइबल भाई मेनस्ट्रीर्म में कैसे जाएगा ? मोती लाल वोरा साहब हम लोगों से मिले थे। वह हमारे गार्डियन है। उधर, आयरन ओर खत्म हो रहा है। हम ने कहा इन सारे कामों को हम लोग कर रहे हैं। महोदय, जगंल में जहां आयरन और भरा हुआ है, सब जगह एक ही फॉरेस्ट है, इसलिए रेल को तो बढ़ाना ही हैं। यह नहीं कि बजट में जो लिख दिया, वहीं हो गया। महोदय, यह एंड नहीं है, यह तो स्टार्टिग है। हम चीजों की स्टडी कर रहे है, अध्ययन कर रहे हैं।अब यह तो हमारा रूटीन वर्क है, इसलिए हमने मात्र 7 महीने के खर्चे की मांग की हैं कि 7 महीने के लिए यह बजट पास किया जाय। उस के बाद माननीय सदस्यों की जो कमेटी बनेगी, उस

में आप संसद सदस्य बैठेंगे और उस में जो मार्गदर्शन देंगे, उसे हम लोग करेंगे । महोदय, आनॅ गोइंग प्रोग्राम जो 46 करोड़ का है, बहुत काम हमने पूरा किया है । जम्मू-कश्मीर के लिए जितना पैसा चाहिए, वह मैं दूंगा और मैंने दिया है ।

हमारा नेशनल प्रोग्राम है । हमने 15 जोड़ी रेल चलाई है और आगे भी रेल चलाना है । आप देखें, हर दस मिनट पर रेल है, आगे रेल है, पीछे रेल है और हम अपने सिग्नल सिस्टम को ठीक रह रहे हैं । यह जो डिब्बे पर डिब्बा चढ़ जाता है, कोंकण में जैसे हादसा हुआ, उसको देख रहे हैं । हमारे यहां बहुत सारी टनल है, जम्मू-कश्मीर में टनल है, यहां मिट्टी में सने हुए बड़े बड़े पत्थर है, यहां पानी होता है और पानी से लुढ़क कर वह पत्थर गिर जाता है । हमने इस ओर काम किया है । वहां एक टनल प्रकृति की वजह से गिर गई, हमारे भाई-बंधु उसमें मरे । मैं उस समय कलकत्ता में था, अपना सब काम छोड़कर मैं उधर गया । आज सेफ्टी और मोडर्नाइजेशन हमारी रेल की प्राइरिटी हैं ।

महोदय, हम लोग पढ़ते थे कि काशी जी से रेल हमारी आई है, सवारी वहां से लाई है, हरा-हरा कुछ पीला-पीला मिठाई वहां से लाई है । रेल से पूरे भारत को जोड़ना है । जो सारी दरगाह है, सारे मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वारे, ऐसे स्थल है, वहां के लिए गांवों के लोगों के लिए अलग अलग ट्रेन हम चलांएगे ताकि लोग दर्शन करें । इसके लिए सबसिडाइज्ड रेट पर रेलवे उनको यात्रा कराएगा,उनके ठहरने का इंजजाम करेगा, खाने का इंतजाम करेगा, पीने के पानी का इंतजाम करेगा । धर्म-विरोधी इन लोगों ने धर्म के नाम पर देश को ठगा है । आप तो दर्शन किए है, अमरनाथ सब लोग जाते है, लेकिन गावं के लोगों को कभी वहां ले गए है ? अब अमरनाथ भी भेज देंगे, काशी-विश्वनाथ भेज देंगे अजमेर शरीफ भेज देंगे, रामेश्वरम भेजेंगे । इधर का आदमी उधर और उधर का आदमी इधर आएगा । जब हम रेल में बैठते हैं तब भारत रेल में बैठता है, चर्चा होती है, बहुत बहस होती है । यहां बहस सांसद करते हैं, लेकिन असली बहस जो गांव की लोकसभा है, रेल की जो लोक सभा है, वहां भारत की चर्चा होती हैं।

महोदय, इस तरह इनके द्वारा पीठ दिखाने से क्या होगा ? पीठ पर मैं हमला भी नही करता हूं । यह हमारी संस्कृति में नहीं । मैंने पहले ही कहा, इन्होंने कुछ नहीं किया और बोलते हैं कि घेरेंगे । कहां घेरोगे घेराए हुए लोगा ? हम विंडिक्टिव नहीं है, लेकिन ज्यादा छेड़ोगे तो हम छोड़ने वाले भी नहीं है । हम यहां बैठे हैं, हम सब हाल जानते हैं, सारा पत्रा खोल देगे । इसलिए छेड़ो मत,सांप को छेड़ो मत ।...(**व्यवधान**)..अब लगता है कि इनके जाने के दिन आ गए है । हम विंडिक्टिव नहीं हैं । कोई टैप बना हुआ है, वह टैप सही हो गया , बहुत सी चीजें सही है । आपने देखा होगा, वह तहलगा वाला टैप । असल बात है कि भगवान किसी को मारते नहीं, बुद्धि भ्रष्ट कर देते हैं । इन लोगों की बुद्धि भ्रष्ट हो रही है । इसमें हम क्या करेंगे । जीभ जो हैं, यह बुलवाती है, यह लोग अभी ज्यादा बोल रहे हैं और कहते हैं कि घेर लेंगे, सदन में घेर लेंगे । घेर कैसे लोगे, हम दूर दूर निकल जांएगे और खुद अपने आप घिर जाओगे ।

महोदय,हमने रेल की क्षमता को बढ़ाना है। मैं माननीय सदस्यों को आश्वस्त करना चाहता हूं कि सत्र समाप्ति के बाद हमारेपास जो रेल है उसमें आप लोगों से, स्टेटवाइज सारे राज्यों के राज्यसभा और लोकसभा के सदस्यों से,वहां के मुख्यमंत्री से जो सुझाव आएगें, हमारे रेलवे के वरिष्ठ पदाधिकारी देखेंगे। सब राज्यों में जाकर मैं रिव्यू करूंगा और जहां कोई कमी होगी उसको मैं दूर करूंगा। रेल आपकी है। क्या यह लालू की है ? यह तो राष्ट्र की संपत्ति है, यह सब की प्रोपर्टी हैं।

महोदय, आप लोगों ने बहुत अच्छे सुझाव रखे,यह सच्चाई है। इन लोगों के पास तो कोई उपाय नहीं था, कहां जाए, क्या बोले क्योंकि कुछ नहीं किया था। महोदय, जब हमारा रेल बजट आया, आपने देखा होगा सैंसेक्स चढ़ गया था मुम्बई का नहीं चढ़ा था, महोदय ? महोदय,यह जो मिट्टी का कुल्हड़ है न, जर्मनी प्रशासन ने, सरकार ने वहां के कुल्हड़ को, कुल्हड़ को अपनी रेल में इंट्रोडयूस करना कोई मामूली बात नहीं हैं। दुनिया में भारत को गुरू होने का सौभाग्य बराबर प्राप्त हुआ लेकिन हमने उन अवसरो को छोड़ा है। कुल्हड़ साधारण चीज़ नहीं है, कुल्हड़ चला तो दुनिया चौंकी है कि भाई आखिर यह क्या है। व्हॉट इज़ दिस। न वह मशीन है, लेकिन कुल्हड़ बन रहा है। अब पेपर में देखा कि चारों तरफ कुल्हड़। देवी –देवताओं को इन मिट्टी मे बर्तनों में शुद्व जल पिलाते हैं या वहां पर पीतल का बर्तन रहता है। इसलिए यह कुल्हड़ और हमारी खादी साधारण नहीं हैं। मैं प्रधान मंत्री से मिलकर कहने वाला हूं कि जितने भी हमारे मंत्री या एम.पी. हैं, इन लोगों को छोड़ दीजिए, इनको फुल पेंट पहनने दीजिए,ये अमरीका वाले लोग है, लेकिन जितने हमारे एम. पी. हैं, सब लोग खादी वस्त्र का इस्तेमाल करें और जितने भी सरकारी दफ्तर हैं, सब जगह जितने करटेन हैं, पर्दे है, पांव-पूंछ हैं, सब खादी से लाइए। अगर आप मार्किट नहीं बनाएंगे तो करोड़ों लोगों को काम कहां से मिलेगा ? केवल गांधी बाबा की तस्वीर लटका देने से, पूजा करने से यह नहीं होगा। गांधी जी के विचारों को याद करने के लिए हमने उनकी एक प्रतिमा को संसद के सामने रखा है। तो इस तरह से बहुत लोगों को काम मिल जाएगा। जुट लाना पड़ेगा , पोलीथिन हटाना पड़ेगा। हम भी तो गांव के अर्थशास्त्री हैं, लेकिन हमसे कोई पूछता ही नहीं। कोलकाता चलो, लाखों लोग जाते थे रेल में चढ़कर के –बिहार के, बिहार के बाहर के, पूरे देश के-जूट मिल में काम करने। जब पूछते थे कि कहां जा रहे हो तो कहते थे कि कोलकाता जा रहे है, तांत चलाने के लिए। जब से पोलीथिन आया, उसी पोलीथिन में सीमेंट भरा आ रहा है और उसी में सब कुछ हो रहा है। इसमें हाइजैनिक का ख्याल नहीं किया गया, हमारे जूट कारखाने बंद हो गए देयर इज वाटर लोगिंग इन असम, कोलकाता एंड किशनगंज एरिया इन बिहार दिज और फुल ऑफ फलड्स क्या फसल होता है, महोदय? एक जूट निकलता है, यह जूट जो पटुआ था, वह सिर्फ बोरा बनाने का या उसमें अनाज भरने का काम ही नहीं करता था,इस देश के 50 प्रतिशत लोग के शरीर पर ओढ़ने के लिए गर्म कपड़ा नहीं है, वे गरीब लोग बोरा को खोलर एक चट्टी बनाकर रजाई का भी काम लेते थे उससे। बोरे में हम लोग ढुक जाते थे। मुंह बाहर और शरीर बोरा के अंदर , हम लोग रखते थे। क्या।

प्लास्टिक में हम जाएंगे। उसी बोरा पर अनाज सुखाओं। इसलिए इस पोलीथिन के खिलाफ मूवमेंट भी करना पड़ेगा। इसलिए इस जूट को लाओ, पोलीथिन को भगाओं, देश को बचाओं और यह इसी सरकार में हो सकता है। इन लोगों के आने की तो उम्मीद नहीं है, यह हमें लोगों को करना हैं। इसलिए इस पर गहन समीक्षा करके हम लोगों को सोचना पड़ेगा।

महोदय, जूट के बाद पशु- पालक के बारे में मैं कुछ कहना चाहता हूं। एनिमल हसबैंड्री इज दी बैकबोन ऑफ आवर इकानोमी मेरूदंड है, एग्रीकल्चर में हमारा ऐनिमल हस्बेंड्री। मिलर्किग काऊ एंड बुफालो यह काम सिर्फ यादव लोग नहीं करते, महोदय,यादव लोग तो यह काम छोड़ रहे हैं, अन्य जाति के लोग डेयरी का काम उठा रहे हैं, उठाना चाहिए, सबको करना चाहिए। पहले हम लोगों के घरों में शादी-ब्याह पक्का करने के लिए या बेटी के लिए वर खोजने आता था तो यदि उसने देखा कि इसके दरवाजे पर दो बैल हैं और दुधारू दो-दो गाय है, तो कहता था कि चलो शादी –ब्याह तय करो, आदमी अच्छा है। अब यह गायब है। सब जगह अब मोटर साइकिल चल गया हैं।

चला है हीरो हौंडा। आदमी कमजोर हो गया , वह अटर-पटर खा रहा है, एम.डी.एच. मसाले वाला खाना खा रहा है और कमजोर हो गया। वह बदमाश को देखता है तो भाग जाता है। इसलिए यह जो दूध और दही है, उसे विश्व हिंदु परिषद, भाजपा और बजरंग दल ने टारगेट किया है। उन्होंने इस देश की माइनॉरिटी को टारगेट किया और काला कानून बनाया। हरियाणा और पजांब में हमारे जो सिक्ख बिरादगी के लोग हैं, जो हिसार से लेकर हरियाणा तक, हरियाणा गाय, हरियाणा बाछी ले जाते थे, उनको टारगेट किया। कोलकाता में हमारे हजारों पशु-पालक जाते हैं, अपनी हजारों-लाखों गायें और भैसें लेकर और वहां के लोंगों को दूध पिलाते हैं। मिष्टी कैसे बनेगी, मिष्टी तो दूध से ही बनेगी। कोलकाता के सब मिष्ठान तो दूध से ही बनेंगे।

महोदय, इन रामभक्त लोगों ने पशु-पालकों के पेट पर लात मारने का काम किया और ऐसा कानून बना दिया। उन्होंने कहा कि ये लोग गाय काटने के लिए ले जा रहे हैं। गाजियाबाद में गुंडों ने उन पशुपालको को लूटने का काम किया , जब वे अपनी गाय-भैसे पंजाब से कोलकाता ले जा रहे थे। एशिया का सबसे बड़ा पशुओं का मेला सोनपुर में लगता था। इन्होंने बंद कर दिया...(**व्यवधान**)...हम पानी नहीं पीते हैं, दूसरे लोग पिएंगे, हम इन लोगों को पानी पिलाकर छोड़ेगे ....(**व्यवधान**)....

महोदय, हमने कहा कि हमारी रेल में लदान किसलिए नहीं हो रहा है ? दानापुर में मान लीजिए समूचे ग्वालों ने रूककर पार्किंग की , वे 2 रूपया किलो दूध लोगों को दे देते थे, क्या करेंगे ? उनको बोल दिया कि गाय-भैंस काटने के लिए कसाई लोग ले जा रहे हैं। ये पशु-पालक लोग कसाई नहीं हैं। कसाई वे है, जिन्होंने पशु-पालकों के पेट पर लात मारने का काम किया और उनका सारा धंधा बंद कर दिया। हमने पर्यावरण विभाग को चिट्ठी लिखी। यह कानून यू.पी. से बना था।

मुलायम सिंह उस समय हमारे साथ नही थे, मैंने उनको भी टेलीफोन किया और मुझे खुशी है कि मैनें जो चिट्टी लिखी, उसके आधार पर पर्यावरण विभाग ने उस कानून में जो शर्त रखी थी, उसको खत्म किया है। अब सारे देश में लाखों-लाख लोगों को रोजगार मिलेगा। इससे दूध बढ़िया मिलेगा, गाय बढ़िया मिलेगी, काउडंग मिलेगा। महोदय, पेस्टिसाइड से सब्जी में कोई स्वाद नही है। ये जो बड़ी-बड़ी गोभी लोग खा रहे है, यह पॉयजनस है, यह मैले पानी में उगाई गई है। हम लोगों के क्वार्टर में ये लोग मैले पानी से गोभी उगाते थे, हमने उसे बंद कर दिया। अगर हम गाय और भैंस रखते है, तो उसके गोबर से किचन गार्डन में चावल, दाल, सब्जी, धनिया का पत्ता, हरी मिर्च, पुदीना पैदा कर सकते हैं, जो आपका स्वास्थ्य ठीक रखेंगे। इससे आपको ब्लड प्रेशर नहीं होगा, आपको "ऐम्स" में नहीं जाना पड़ेगा। इससे कितना फायदा है। गोबर से गोवर्धन गिरधारी, गोबर से गौरी-गणेश बनता है। गाय के गोबर से चौंका लीपा जाता है।

इससे हमारी रेलवे की आमदनी जहां बढ़ेगी, वहां पशु –पालको की आमदनी का रास्ता भी हमने खोला है। इसलिए मैं माननीय सदस्यों की और देश की महान जनता की प्रशंसा करता हूं। मैं आप सबको इनवाइट करता हूं कि हमारी रेलवे का दरवाजा आप सबके लिख खुला है, कभी भी आइएगा, कहीं ट्रेन चाहिए, कहीं ट्रेन रूकवानी है, कहीं किसी को सज़ा करवानी है, कहीं कोई गड़बड़ देखते है तो जरूर बताइएगा। अब हमारे यहां 25,000 अलमैन्ड गेट हैं। ट्रक आकर घुस जाता है, रेल इधर आकर रगड़कर खत्म कर देती है। हमने फैसला लिया कि हर गेट पर मैन रखा जाएगा।

आप सभी लोग तो सभी राज्यों के मुख्य मंत्रियों पर दबाव डालिएगा कि जिन राज्यों में आर.ओ.बी. की जरूरत है उसका प्रस्ताव तुरन्त रेल मंत्रालय को भेजें। हम भी उनको बुला रहे हैं। इसके लिए 50 प्रतिशत राज्य देगा, 50 प्रतिशत हम देंगे। इतना फंड पड़ा हुआ है कि हम उसका खर्चा नहीं कर पा रहे है। आप लोगों को मालूम ही नहीं रहता तथा आप जानते हैं कि हम ही नहीं बनवा रहे हैं। नीतीश कुमार जी ने जानते हुए भी आपको नहीं बताया। कोई नहीं बतलाता है असली बात। हम सब को भेद खोल देते है। इसलिए आर.ओ.बी. बनेगा क्योंकि रेल को ठीक से चलाना है। जो हमने ऐलान किया था उसके अनुसार कुछ गाड़ियों को और आगे बढ़ा दिया है। हावड़ा और मुम्बई के बीच में एक और साप्ताहिक गाड़ी चलाने का प्रस्ताव है। केरल राज्य के लिए मंगलौर और त्रिवेंद्रम बीच चलने वाली 6603/6604 मालवीय एक्सप्रेस को सप्ताह में एक बार से दो बार बढ़ा दिया है। अगर जरूरत पड़ेगी तो तीन बार भी कर किया जाएगा। फिर भी जरूरत पड़ेगी तो चार बार भी कर दिया जाएगा। इसलिए हम उसको देखते रहेगें और मॉनिटरिंग करते रहेंगे। कानपुर से छत्तीसगढ़ जाने के लिए, इसका कानपुर से स्टार्टिंग पोइंट है। छत्तीसगढ़ कटनी मानिकपुर तो अलग है। यहां भी हम दो-तीन महीने में रेल देंगे वहां तक जाने के लिए। कानपुर से साप्ताहिक गाड़ी चलाने का प्रस्ताव है। प्रणब बाबू के यहां आजमगंज घाट के रेस्टोरेशन का सवाल है। रक्षा मंत्री से बात हुई हैं।

इसको हम प्लानिंग कमीशन से कराकर जो वहां दो ट्रेन है । राजस्थान के अलवर-लक्ष्मणगढ़ में दो ट्रेन का रूकाव है । जिस ट्रेन को आपने लिखकर दिया है उसको हमने इंक्लूड कर दिया है । लेकिन यह मतलब नहीं कि सब जगह ट्रेन रूकने लगेगी, नहीं तो वे पैसेंजर ट्रेन ही हो जाएगी । इसलिए जहां जरूरी है वहीं रोकी जाएगी । इसलिए महोदय, मैं आप सबको धन्यवाद देता हूं कि जितनी बात आप बोल रहे हैं वह सब प्रोसीडिंग्स में है । लेकिन महोदय, एक बात और है वह है सुरक्षा, गोधरा के बारे में । जानते है क्यों लोग दागी बोलते हैं ? जिस दिन से हम रेल मंत्री बने उसी दिन से गोधरा की फाइल खुलने लगी कि रेल विभाग ने क्या जांच किया फिफ्टी नाइन पिंपुल वर किल्ड़ । ट्वेन्टी फोर पिपुल वर इनजर्ड । बट टिल टुडे द नेशन एंड अदर्स डोन्ट नो व्हाट हेपेन्ड देयर एण्ड व्हाट द फाइन्डिंगस ऑफ द रेलवे इनक्वारी वर ।

महोदय, जब हमने गोधरा की फाइल निकालना शुरू किया तो अखबार वाले पूछते रहते थे कि क्या कर रहे है । हमने कहा कि समय आने पर हम इसको उजागर करेंगे । यह प्रोपर प्लेटफार्म है । कि राज्य सभा को हक है तथा आपके माध्यम से देश को जानने का यह हक है कि आखिर क्या हुआ । यह है गोधरा कांड । महोदय, दिनांक 27-2-2002 को पश्चिमी रेलवे के गोधरा स्टेशन के निकट 9166 मुजफ्फरपुर-अहमदाबाद सांबरमती एक्सप्रेस में आग लगने की घटना के कारण कितने लोगों की जानें गई ? 24लोग घायल हुए एवं रेलवे सम्पत्ति को भारी नुकसान पहुंचा । घटना के ढाई साल बाद भी अभी तक इस दुर्घटना के कारणों का पता नहीं लग सका । रेलवे अधिनियम 1989 की धारा 114 के अन्तर्गत रेलवे सरंक्षा आयुक्त के द्वारा वैधानिक जांच नहीं की गई और न ही धारा -156 के अन्तर्गत विभागीय जांच हुई । मुझे सदन को यह सूचित करते हुए अफसोस हो रहा है कि गोधरा में दिनांक 26-2-2002 को सांवरमती एक्सप्रेस के एस-6 कोच में जो आग की घटना हुई उसको तत्कालीन रेल मंत्री एंव एन.डी.ए.की सरकार ने आग लगाने की घटना करार दिया बिना जांच किए, बिना वहां गए । एक मंत्री नहीं गया, रेल मंत्री नहीं गए ।

वन साइडिड, आठ महीने के बाद रेलवे सेफ्टी ने चिट्ठी भेज दी, दी होल रेलवे एडमिनिस्ट्रेशन एनक्लुडिंग द मिनिस्टर एंड द एन.डी.ए. गवर्नमेंट केप्ट मर्म डमी बनकर रह गये, इस घटना को देखने के लिए कोई नहीं गया, चुप रहे, दाल में काला है । जब हमने फाइल देखी, रेलवे ने इसकी कोई जांच नहीं कराई, कैसे देश चला रहे थे लोग ? क्या कर रहे थे लोग ? महोदय, हमको लगता है कि यह बड़ा भारी षड्यंत्र है । मैंने इसको देखा है रेलवे ने कहीं कुछ नहीं किया है । इसके बारे में मिली-भगत हमको लगती है । महोदय, भारी षडयंत्र करके, कोई प्रीनियोजित करके यह सारा कांड, दंगा-फसाद करवाया गया है ।

उपसभाध्यक्ष महोदय, मेरी इस बात की तरफ ध्यान दिया जाये ।मुझे बहुत दुख हो रहा है, सदन को यह बताते हुए कि कोई नहीं गया, कितने कंसर्न थे इस देश के लोगों से, नागरिकों से । आठ महीने के बाद जो मेंडेटरी था रेलवे कानून और एक्ट के तहत, जांच कराना, देखना समझना,

चुपचाप बैठे रहे, कोई न कोई सलाह करके बैठे रहे और वन साइडिड, गुजरात सरकार, श्री नरेन्द्र मोदी ने खूद यह तय कर लिया, जो देखने से लगता है, यह तय कर लिया, क्या जांच कराने का, जुडिशियज इन्क्वायरी, क्या बनवाया । महोदय, गुजरात सरकार ने जांच आयोग अधिनियम, 1952 के अंतर्गत 6.3.2002 को परिस्थितियां, घटनाक्रम, जिनसे गोधरा रेलवे स्टेशन के निकट 27.2.2002 को साबरमती एक्सप्रेस के कुछ सवारी डिब्बों में आग लगाई गई, यह खुद तय कर लेना, यह नहीं लिखा कि क्या हुआ, नहीं हुआ । आग लगाई गई की घटना की जांच के लिए जांच आयोग का गठन किया । फोरेंसिक सांइस लेबोरेटरी से जांच भी कराई गई । उसको पढ़कर आपकी इजाजत से सुनाता हूं और हमने इसकी उच्च स्तरीय विभागीय जांच कराने का फैसला लिया है । हमने फैसला लिया है कि गोधरा रेलवे स्टेशन के नजदीक, निकट 9066 मुजफ्फरपुर-अहमदाबाद साबरमती एक्सप्रेस में आग लगने की घटना के कारणों एंव सही तथ्यों का पता लगाने के लिए उच्च स्तरीय जांच कराई जाएगी । महोदय, यह उनकी जांच रिपोर्ट है, इसको मैं आपकी अनुमति से पढ़कर सुनाना चाहता हूं । महोदय, एफएसएल का जो रिपोर्ट हैं,वह यह है:

"Report of the Forensic Science - Laboratory - Ahmedabad.

Forensic Science Laboratory, State of Gujarat New mental cornor, Ahmedabad-16

Sport investigation report No. 2 regarding CR No. 9/2002. Godhra Railway Police Station.

A team of forensic experts had visited the place of offence on 3/5/2002 in which alongwith undersigned ShriA.N. Joshi, Scientific Officer, Ahmedabad was included. In order to recreate the real picture of how the offence was committed on the day of incident, one coach of the train was kept on the same spot. With the help of different types of containers experimental demonstrations were also carried out by using liquids inside the said coach. On the basis of which the following conclusions were made.

"1. It was found that the height of the window of the coach was around 7 ft. from the ground at the place. Under this circumstance, it was not possible to throw any inflammable fluid inside from outside the coach from any bucket or carboy, because by doing this, most of the fluid was getting thrown outside. At the place of the incidents there was one heap of grit of three feet height at a distance of around 14 ft. in the Southern side of the coach. Water was thrown on the windows of the coach with the help of bucket standing on the top of the said heap, in that case only about 10 to 15 per cent of the water went inside and the rest of the quantity was spilled outside tiself. Thus, if the inflammable fluid is thrown from outside,

then bottom side of the coach. But, after examination of the coach and the track, no effect was found of the fire on bottom side below the windows of the coach. By taking into consideration this fact and also the burning pattern of the outer side of the coach, a conclusion can be drawn that no inflammable fluid had been thrown inside from outside of the coach.

There also appears to be no possibility that any inflammable liquid was thrown through the door of the bogie.

By standing in the passage between the compartment of the bogie and the Northern side door of the eastern side of the bogie, water was poured towards the western side from a container with a wide mouth like a bucket; in that case most part of the bogie was covered with 60 litres of water. By pouring the water in this manner, the water went only towards the west and no part of it came out of the door nor did it go towards the latrine side.

On the basis of the above experimental demonstration, such a conclusion can be drawn that 60 litres of inflammable liquid was poured towards the western side by using a wide mouthed container by standing on the passage between the norther side door of the eastern side of the S-6 coach and the compartment of seat No. 72 and coach was set on fire immediately thereafter. If the period after the train had started from Godhra Railway Station, intensity of fire; the degree of burn of the objects that were inside the bogie etc., are taken into account, can also be concluded that a large quantity (around 60 litres) of highly inflammable fluid was used to set the aforesaid fire that the fire had spread very rapidly."

उसके बाद अपना नाम लिखा है।

"The sketch of the coach and the sketch of the spot are included."

फिर दूसरे का जिसने खाली कराकर दिया।

'The place of offence on 1 /5/2002 in the team of the experts alongwith the undersigned, the other experts were Shri A.R. Vaghela, Scientific Officer, Vadodara, Shri Yogesh Patel, Scientific Officer (Mobile), Panchmahal and Shri S.L. Desai, Photographer, Surat. The experts have made detailed investigation of the burnt down S-6 coach of the Sabarmati Express train. The said coach was kept in the yard of the Godhra Railway Station. The observations made on the basis of the formations learnt by the detailed examination of the coach are as under.

A large number of his marks were observed on the outer part of the southern side of the burnt out S-6 coach which were due to stones. "खाली जब जल गया, उसके बाद का है।

"Apart from this, a large number of stones were found scattered inside the coach, and similarly, glass pieces were also seen. It was found that the said glass pieces were of the windows. From these observations, it is possible to say that there was a large-scale stone pelting on the coach from outside and the glasses of the southern side were primarily broken due to the stone throwing and the glasses of the northern side were broken due to the heat of the fire."

From the condition of the colour on the door of the coach, the burning pattern, condition of the hand lock, the marks of the melting aluminium strips of the frame of the window, etc. it can be established that both the east-west doors of the northern side of the coach and similarly the eastern door of the southern side thus a total of three doors were opened at the time of the incident of fire and the door in the west direction of the southern side was closed.

जब लोग पहुचें तब खोला। वह कहता :

Out of the windows in the southern side, one rod of the one of the windows was found to be broken due to heat. As the height of the lower part of the window was at the height of more than 7 ft. from the ground, it negates the possibility of force on the rod from window side. Further it was not found that any instrument was used to bend the rod.

उन्होंने कहा है कि चाकू से फाड़कर घुस गए।

Thus, it becomes clear that the rod was attempted to be broken by the use of force from inside. It appears that the other rods had become loose due to the melting of joints due to heat.

By observing the burning pattern inside the coach, its degree, the depth and the eligatering pattern on the floor, it appears that the fire had spread inside the coach very rapidly. Further by observing the intensity of the eligatering pattern on the floor, it appears that the fire has strated from the eastern side of the coach and thereafter spread towards western side rapidly. Further, it appears that the intensity and proportion of the burning of the objects inside the coach was very high, up to around 80% part of the

east to west side whereas in the 20% part, the intensity of burning was less in comparison with 80 per cent part.

No sign was observed of the use of any corrosive fluid like acid in the said fire."

By observing the condition of the frames of the windows of the coach it appears that all the windows of the coach were closed during the there of fire.

तो यह जब आ गया, तो आने के बाद भी टर्म्स ऑफ कन्डीशन्स को नहीं बदला गया। इतना बड़ा, भयानक हादसा और उसके बाद चारों तरफ जो कराया गया, इसलिए महोदय हमने यह फैसला लिया है कि दूध का दूध और पानी का पानी होना चाहिए । इसके लिए एक उच्च स्तरीय जांच, विभागीय जांच के हमने आदेश दिए है और तीन महीने से अंदर यह रिपोर्ट आएगी और हम कार्यवाही करेंगे । हमारे जो-जो पदाधिकारी नहीं गए, उनकी जिम्मेदारी भी तय करेंगे। ये देश की सुरक्षा की बात करते हैं ? इन लोगों ने बयान दिया था कि आई.एस.आई. का है, पाकिस्तान का है, अपनी टर्म्स आफॅ कन्डीशन्स बनाई । यह फारेंसिक सांइस लैबोरेटरी की रिपोर्ट कानून के रहते। यह तो असली षडयंत्र है। इसे यही बात साबित होती है कि काननू के अंतर्गत क्यों रेलवे के लोग डमी बनकर रह गए। फिर भी हमने उचित समझा कि इसकी उच्च स्तरीय जांच कराई ताए ताकि दूध का दूध और पानी का पानी हो जाएं और दुनिया को मालूम हो जाए कि आग लगाने वाला कौन था। किसकी साजिश से यह हुआ ? क्या हुआ व्हाट हेपेन्ड ? अभी तक दुनिया को और देश को मालूम नहीं हैं।

महोदय, यह कहकर मैं अपनी बात समाप्त करता हूं और माननीय सदस्यों को धन्यवाद देता हूं। मैं आपको इनवाइट करता हूं कि आइए, हम सब मिलकर रेलवे को अपनी सम्पत्ति समझकर, देश के हर हिस्से का हम सुविधा देकर आगे बढ़ाएं। आपने हमारी सराहना की है, हिम्मत बढ़ाई है, देश की जनता ने हिम्मत बढ़ाई है। आपकी सेवा में हमारी रेल हमेशा तत्पर है- तैयार है-चाहे युद्ध का समय हो तूफान का टाइम हो, रात हो या दिन हो भारतीया रेल को दुनिया की नंबर एक बनाने में मैं आपका पुरजोर समर्थन और सहयोग चाहता हूं, बहुत बहुत धन्यवाद और महोदय, आपको भी धन्यवाद । अपनी बात को अब मैं समाप्त करता हूं।

उपसभाध्यक्ष (**श्री संतोष बागड़ोदिया**): मंत्री जी, प्रभा ठाकुर जी आपसे एक बात पूछेंगी, लेकिन इससे पहले मैं यह बोलना चाहता हूं कि आपने स्वच्छता के बारे में बात कही है, पार्लियामेंट में भी आपका रेलवे डिपार्टमेंट ही काम करता है, अगर आप वेज और नॉनवेज के अलग-अलग वर्कर बना दें और अलग उसके बर्तन बना दें तथा उनकी स्वच्छता और बढ़ा दें तो पार्लियामेंट हाउस में भी हमें कुछ अच्छा और स्वच्छ खाना मिल सकेगा और डिश वाशर लगा दें क्योंकि बहुत गंदगी रहती है। अब प्रभा ठाकुर जी एक मिनट कुछ बोलन चाहती हैं।

डा. प्रभा ठाकुर (राजस्थान)**:** उपसभाध्यक्ष महोदय, वैसे रेल बजट पर मैंने विस्तार से अपने

विचार रखे थे, निश्चित रूप से वे रेल मंत्री जी तक पहुंचे होंगे। मैं अभी सिर्फ इतना ही कहना चाहती हूं कि पहले तो मैं आपके विचारों का बहुत-बहुत स्वागत करती हूं जो विचार अभी आपने अपने वक्तव्य में प्रस्तुत किए है। आपने एक आम आदमी, एक गरी आदमी, देश की आम जनता , तथा समाज के सभी समुदायों की सद् भावना की बात करते हुए बातें कहीं है। मैं आपसे एक ही निवेदन करना चाहूंगी कि माननीय रेल मंत्री जी थोड़ा कुछ राजस्थान पर अनुग्रह करें और विशेष रूप से अजमेर पर क्योंकि अजमेंर एक ऐसा स्थान है जो धार्मिक सद् भावना का सदेंश देता है। जहां पर पुष्कर तीर्थ और ख्वाजा गरीब नवाज की दरगाह है यहां से सद् भावना का संदेश पूरे विश्व में जाता है। यहां पर वर्ष पूरे विश्व के तीर्थ यात्री पर्यटन करने की दृष्टि से भी लोग आते है और लाखों-करोंड़ों श्रद्वालु जियारत और दर्शन करने भी आते हैं मैं रेल मंत्री जी से सिर्फ यह अनुरोध करना चाहूंगी।

उपसभाध्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया): अब आप खत्म करिए।

डा. प्रभा ठाकुर:जो पूजा एक्सप्रैस जयपुर से चलती है, उसे अजमेर से चलाने का कष्ट करें। उस ट्रेन को केवल सवा सौ किलोमीटर का फासला और तय करना होगा। इस प्रकार एक पूजा के स्थान अजमेर शरीफ से लेकर जम्मू तेवी वैष्णों देवी तक इस ट्रेन से जोड़े। इससे एक धार्मिक सद् भावना का संदेश भी जाएगा और अजमेर के आस-पास के आठ-दस जिले वाले लोगों को भी सुविधा मिलेगी। धन्यवाद।

उपसभाध्यक्ष(श्री संतोष बागड़ोदिया): ठीक है, आपने बोल दिया है।

श्री लालू प्रसाद: मैं आपको आश्वस्त करता हूं कि मैं इसका ख्याल रखूंगा । आपने लिखकर भी दिया है। हम उसको देख लेंगें और देखकर उस पर विचार करेंगे।

उपसभाध्यक्ष(श्री संतोष बागड़ोदिया): मौलाना आज़मी जी, जो आपको बोलना हो, उसे आप एक लाइन में ही बोल दीजिए।

मौलाना ओबैदुल्लाह खान आज़मी (उत्तर प्रदेश): सर, मुझे सिर्फ एक बात कहानी है कि रेलवे मिनिस्टर साहब से मुल्क को जिस सच्चाई के करीब ले जाने की कोशिश की है, इसके लिए मैं इनको मुबारकबाद देता हूं। हमारे मुल्क में हमारे देश की सरकारी जुबान हिन्दी है। रेलवे के माध्यम से हिन्दी जुबान के प्रसार में पूरे हिन्दुस्तान में रेल जितना योगदान करती है, दूसरे जराय कम हैं। मैंने एक सुझाव दिया था और जो रेलवे हिन्दी सलाहकार समिति मे पास भी हुआ था कि रेल के डिब्बों के बाहर "हिन्दी हैं हम, हम वतन है हिन्दोस्ता हमारा लिखा जाए ताकि रेल जिन-जिन इलाकों में जाती है वहां पर रेल के माध्यम से हिन्दी का प्रचार और प्रसार भी होगा और देशभक्ति के जज्जे का इजहार भी होगा। रेलवे ने मेरी बात मान भी ली मगर अंदर एक छोटी-सी पटटी लगाई जाती है और अंदर लिखा जाता है, "हिन्दी है हम वतन है, हिन्दास्तां हमारा" अगर इसे बाहर लिख

दिया जाए तो हिन्दी का भी बहुत बड़ा काम होगा देशभक्ति के जज्जे का इजहार भी होगा। मेरा रेल मंत्री जी से आग्रह है कि वे इसको पूरा कर दें।

مولانا عبید اللہ خان اعظمی : سر، مجھے صرف ایک بات کہنی ہے کہ ریلوے منسٹر صاحب نے ملک کو جس سچائی کے قریب لے جانے کی کوشش کی ہے، اس کے لئے میں ان کو مبارکباد دیتا ہوں- ہمارے ملک میں ہمارے دیش کی سرکاری زبان ہندی ہے- ریلوے کے مادھیم سے ہندی زبان کے پرسار میں پورے ہندوستان میں ریل جتنا یوگدان کرتی ہے، دوسرے ذرائع کم ہیں- میں نے ایک سجھاؤ دیا تھا اور جو ریلوے ہندی صلاح کار سمیتی میں پاس بھی ہوا تھا کہ ریل کے ڈبوں کے باہر "ہندی ہیں ہم وطن ہے ہندوستاں ہمارا" لکھا جائے تاکہ ریل جن جن علاقوں میں جاتی ہے وہاں پر ریل کے مادھیم سے ہندی کا پرچار اور پرسار بھی ہوگا اور دیش بھکتی کے جذبے کا اظہار بھی ہوگا- ریلوے نے میری بات مان لی بھی مگر اندر ایک چھوٹی سی پٹی لگائی جاتی ہے اور اندر لکھا جاتا ہے، "ہندی ہیں ہم وطن ہیں ہندوستاں ہمارا" اگر اسے باہر لکھ دیا جائے تو ہندی کا بھی بہت بڑا کام ہوگا دیش بھکتی کے جذبے کا بھی اظہار ہوگا- میرا ریل منتری جی سے آگرہ ہے کہ اس کو پورا کر دیں-

उपसभाध्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया): ठीक है, मंत्री जी इसे देख लेंगे। आप बोलना चाहते हैं ?

श्री लालू प्रसाद: हम इस बात का आदर करते हैं केवल यहीं नहीं महान सन्त कबीर की वाणी और उनका जो निगुण है, मैसेज है, वह भी हम रेलवे में चलवाएंगे जो आज-कम फिल्मी चलता रहता है। जब लोग सुबह उठें और शाम के समय कबीर साहब के बारे में उन्हें ज्ञान हो। इसी प्रकार कबीर है, जायसी है, इन सब लोगों का वर्णन करना है। हमें कबीर दास जी को यादा करना है। इसमें हिन्दी तो है इसके साथ ही क्षेत्रीय भाषाओं को बढ़ावा देंगे।

† Transliteration in Urdu Script.